

कार्यकारी सारांश

परिचय

एमओईएफ और सीसी अधिसूचना एसओ 141 (ई) डीटी के अनुसार। 15 जनवरी, 2016 "एक क्लस्टर का निर्माण तब होगा जब एक पट्टे की परिधि के बीच की दूरी एक समरूप खनिज क्षेत्र में अन्य पट्टे की परिधि से 500 मीटर से कम हो" और प्रस्तावित खदान क्लस्टर "औरंगाबाद सोन क्लस्टर 05" 02 हो रहा है। रेत खदान पट्टे। औरंगाबाद जिले में नदी सोन के साथ रेत ब्लॉक के कुल 5 संख्या समूह हैं। वर्तमान रिपोर्ट औरंगाबाद सोन क्लस्टर 05 से संबंधित है जिसमें 02 रेत खदान पट्टे शामिल हैं।

प्रत्येक खदान के पट्टे का विवरण तालिका संख्या 1.1 में दिखाया गया है

टेबल नंबर 1 प्रत्येक खदान के पट्टे का विवरण

| क्रम सं। | रेत घाटों का नाम | पट्टे का नाम | हेक्टेयर में क्षेत्रफल | टन / वर्ष में उत्पादन |
|----------|------------------|---------------------------|------------------------|-----------------------|
| 1 | औरंगाबाद सोन 39 | एम / एस राजाला खान | 54 | 2786940 |
| 2 | औरंगाबाद सोन 40 | एम / एस अजीम एंटरप्राइजेज | 100 | 5230440 |

अनुमानित लागत

परियोजना की अनुमानित लागत तालिका सं। 1.2 नीचे दिया गया है।

टेबल नंबर 2 प्रत्येक खदान परियोजना की अनुमानित लागत

| रेत घाटों का नाम | कुल परियोजना लागत। (लाख) | ईएमपी लागत (लाख) | | CER COST (लाख) |
|------------------|--------------------------|------------------|-------------|----------------|
| | | पूंजी लागत | आवर्ती लागत | |
| औरंगाबाद सोन 39 | 423.95 | 6.65 | 7.94 | 8.47 |
| औरंगाबाद सोन 40 | 777 | 11.25 | 7.94 | 15.54 |

कार्यकारी सारांश सोन जिला औरंगाबाद नदी पर प्रस्तावित रेत खनन परियोजना (औरंगाबाद सोन क्लस्टर -05)

परियोजना विवरण

स्थान

प्रस्तावित खनन पट्टा क्षेत्र भारत के सर्वेक्षण में आता है G45M11। यह रेत खनन परियोजना (लघु खनिज) है, जिसमें 05 नग शामिल हैं। क्लस्टर रूप में रेत घाटों की। मौज़ा / गाँव, खता / खेसरा की सूची तालिका संख्या में दी गई है। 1.3। सभी बालू घाट (औरंगाबाद सोन 39 और औरंगाबाद सोन 40) का खदान पट्टा जिला औरंगाबाद, बिहार के दाउदनगर के अंतर्गत आता है।

TAND NO.1.3 SAND GHATS और PLOT का GHAT विवरण

| एस। | घाट का नाम | थाना नं। | खता नं। | खेसरा नं। | मौज़ा / गाँव | खंड मैथा। |
|-----|-----------------|----------|---------|-----------|-------------------------------------|-----------|
| 1 | औरंगाबाद सोन 39 | - | 341 | 1456 | मौज़ा- शमशेर नगर, गाँव-नानू बिगहा | दाउदनगर |
| 2 | औरंगाबाद सोन 40 | - | - | - | मौज़ा- मोहम्मदपुर, विल्- मोहम्मदपुर | दाउदनगर |

साइट के सहयोगी

खदान के पट्टे के निर्देशांक नीचे सूचीबद्ध हैं:

टेबल नं। १.४ मेन लीव सीओ-ऑर्डिनेट्स

| GHAT का नाम | अक्षांश देशांतर |
|-----------------|---|
| औरंगाबाद सोन 39 | A. 25 ° 4'53.69 "N 84 ° 26'35.76" E B. 25 ° 5'3.06 "N 84 ° 26'22.71" E C. 25 ° 5'32.56 "N 84 ° 26'29.79" E D. 25 ° 5'25.71 "N 84 ° 26'51.42" E |
| औरंगाबाद सोन 40 | A. 25 ° 5'25.71 "N 84 ° 26'51.42" E |

कार्यकारी सारांश सोन जिला औरंगाबाद नदी पर प्रस्तावित रेत खनन परियोजना (औरंगाबाद सोन क्लस्टर -05)

| | |
|--|------------------------------------|
| | B 25 ° 5'57.79 "N 84 ° 26'57.12" E |
| | C 25 ° 5'35.87 "N 84 ° 26'19.35" E |
| | D.25 ° 6'10.11 "N 84 ° 26'22.39" E |

संपर्क:

- अनुग्रह नारायण Rd। रेल्वे स्टेशन, लगभग। 27.96 किमी एसडब्ल्यू की ओर।
- गया एयरपोर्ट, लगभग। 62.90 किलोमीटर एसई की ओर
- एनएच -98, लगभग। 1.39 किलोमीटर सेई की ओर ।।

परियोजना की प्रमुख विशेषताएं

| आवेदक का नाम और पट्ट का पता | क्रम सं। | रेत घाटों का नाम | आवेदक का नाम / पता | |
|-----------------------------|---|------------------|--|-----------|
| | 1 | औरंगाबाद सोन 39 | ग़ज़ल खान पैगंबर- ग़ज़ल खान, जोड़ें- मनेरदरगाह के पास, चार हज़ार, मनेर, पटना, बिहार मोब नं- 9334412871 ईमेल- ghazala4412@gmail.com | |
| | 2 | औरंगाबाद सोन 40 | अजीम एंटरप्राइजेज, Prop.- मज़हर खान जोड़ें- ग्राउंड फ्लोर, मोहल्ला- चार हज़ार मनेर, पटना, बिहार मोब नं- 9852100070 ईमेल- mazharkhan086@gmail.com | |
| मेरा नाम | औरंगाबाद सोन क्लस्टर 05 सांड खनन परियोजना | | | |
| गाँव और तहसील | एस। | घाट का नाम | मौजा / गाँव | खंड मैथा। |
| | 2 | औरंगाबाद सोन 39 | मौज़ा- शमशेर नगर, गाँव- नानू बिगहा | दाउदनगर |
| | 3 | औरंगाबाद | मौज़ा- मोहम्मदपुर, विल्- | दाउदनगर |

कार्यकारी सारांश सोन जिला औरंगाबाद नदी पर प्रस्तावित रेत खनन परियोजना (औरंगाबाद सोन कलस्टर -05)

| | | | | | |
|--------------------|-------------------|----------------------------|---------------------------|-------------------------------|------------------------------|
| | | सोन 40 | मोहम्मदपुर | | |
| जिला और राज्य | औरंगाबाद, बिहार | | | | |
| खनिज | रेत | | | | |
| क्षेत्र (हेक्टेयर) | क्रम सं। | रेत घाटों का नाम | पट्ट का नाम | हेक्टेयर में क्षेत्रफल | टन / वर्ष में उत्पादन |
| | 1 | औरंगाबाद सोन 39 | एम / एस गज़ाला खान | 54 | 2786940 |
| | 2 | औरंगाबाद सोन 40 | एम / एस अजीम एंटरप्राइजेज | 100 | 5230440 |
| पानी की मांग | का नाम घाट | कुल जलप्रपात केएलडी | घरेलू KLD | धूल का दमन KLD | हरा पट्टा KLD |
| | औरंगाबाद सोन 39 | 9.88 | 3.53 | 5.0 | 1.35 |
| | औरंगाबाद सोन 40 | 13.3 | 5.8 | 5.0 | 2.5 |

खुदाई

खनन प्रक्रिया ड्रिलिंग और ब्लास्टिंग के बिना अफीम अर्ध-मशीनीकृत विधि है। टिपरों में खनिज लोड करने के लिए हल्के वजन वाले उत्खनन का उपयोग किया जाएगा। कोई ड्रिलिंग / ब्लास्टिंग की आवश्यकता नहीं है क्योंकि सामग्री प्रकृति में ढीली है।

रेत का शोषण 3.0 मीटर की गहराई तक किया जाएगा। एक उत्खनन की तैनाती के साथ रेत का दोहन किया जाएगा और टिपरों में भरा जाएगा और विभिन्न खरीदारों को पहुंचाया जाएगा।

परिणाम और उत्पादन

7.5 मीटर के सुरक्षा क्षेत्र को पट्टा क्षेत्र के चारों ओर छोड़ दिया जाएगा। काम की गहराई सतह से 3 मीटर होगी। टन प्राप्त करने के लिए मात्रा को थोक घनत्व (2.0) से गुणा किया जाता है।

यह एक नदी तल जमा है और खनन क्षेत्र को प्रत्येक वर्ष मानसून अवधि के दौरान फिर से भरना होगा और खदान की गहराई प्रत्येक वर्ष नदी की रेत से भर जाएगी और क्षेत्र अपनी मूल स्थलाकृति को बहाल करेगा।

साइट सुविधाएं और केंद्र

जलापूर्ति

पीने और घरेलू प्रयोजन के लिए श्रमिकों के लिए प्रस्तावित परियोजना के लिए पानी की आवश्यकता होगी। धूल दमन के लिए भी पानी उपलब्ध कराया जाएगा। ताजे पानी का उपयोग केवल पीने के उद्देश्य के लिए किया जाएगा। पानी की आपूर्ति पास के गांव से उपलब्ध स्रोतों से की जाएगी।

अस्थाई रेस्ट शेल्टर

आराम के लिए साइट के पास श्रमिकों के लिए एक अस्थायी आराम आश्रय प्रदान किया जाएगा। के अतिरिक्त, प्राथमिक चिकित्सा बॉक्स होगा साइट पर उपलब्ध कराया जाएगा। श्रमिकों के लिए स्वच्छता सुविधा अर्थात् सेप्टिक टैंक या सामुदायिक शौचालय की सुविधा प्रदान की जाएगी।

बेसलाइन पर्यावरणीय स्थिति

वायु, शोर, जल, मिट्टी, वनस्पतियों और जीवों के लिए प्रस्तावित खनन के संबंध में पर्यावरणीय आंकड़े एकत्र किए गए हैं। मार्च 2020 से जून 2020 तक गर्मियों के मौसम में खनन पट्टा क्षेत्र के आसपास 10 किमी की रेडियल दूरी वाले क्षेत्र में बेसलाइन पर्यावरण अध्ययन किया गया था।

अंतरिक्ष-विज्ञान

निगरानी अवधि के लिए सारांशित मौसम संबंधी डेटा (मार्च 2020 से जून 2020 तक) नीचे दिया गया है:

टेबल १.५: - बेसल एनवायरनमेंटल स्टेटस

| गुण | आधार रेखा की स्थिति |
|-----|---------------------|
|-----|---------------------|

| | |
|-------------------------------------|---|
| <p>परिवेशी वायु गुणवत्ता</p> | <p>10 AAQ निगरानी स्टेशनों के लिए परिवेशी वायु गुणवत्ता अध्ययन दिखाता है PM10 के लिए अधिकतम और न्यूनतम जमीनी स्तर की सांद्रता है AAQ3 पर क्रमशः 96.3 96g / m³ और AAQ5 पर 48.0 mg / m³। जहांकि PM2.5 के लिए अधिकतम और न्यूनतम जमीनी स्तर की एकाग्रता क्रमशः AAQ3 पर 57.6 mg / m³ और AAQ1 में 27.6 AA_g / m³ के बीच होती है। इसी तरह, SO₂ के लिए, क्रमशः AAQ4 और के लिए अधिकतम और न्यूनतम जमीनी स्तर की एकाग्रता 13.2 3g / m³ और 3.4 for_g / m³ के बीच भिन्न होती है AAQ10 स्टेशन। NO₂ के लिए अधिकतम और न्यूनतम जमीनी स्तर एकाग्रता क्रमशः 28.3 mg / m & 10.2 /g / m³ के बीच बदलती है AAQ10, और AAQ4 स्टेशन।</p> |
| <p>शोर का स्तर</p> | <p>शोर निगरानी अध्ययन से पता चलता है कि न्यूनतम और अधिकतम शोर का स्तर दिन का समय NQ3 में 45.7 dB (A) और NQ9 में 50.47 dB (A) के रूप में दर्ज किया गया। रात के समय न्यूनतम और अधिकतम शोर का स्तर 30.9 पाया गया NQ6 पर dB (A) और NQ8 में 40.7 dB (A)। सिवाय अध्ययन क्षेत्र के अन्य कोई प्रमुख शोर उत्पादक स्रोत नहीं हैं कुछ घरेलू गतिविधियाँ, जो क्षेत्र के स्थानीय शोर स्तर में योगदान करती हैं। आसपास के गाँवों में यातायात की गतिविधियाँ परिवेशगत शोर को भी बढ़ाती हैं क्षेत्र का स्तर।</p> |
| <p>पाना का गुणवत्ता</p> | <p>7 भूजल नमूनों और 3 सतह के पानी के नमूनों का विश्लेषण किया गया और निष्कर्ष निकाला है कि: भूजल के भौतिक रासायनिक विश्लेषण की परीक्षा यह दर्शाता है कि भूजल की गुणवत्ता सामान्यतः सम्मान के साथ अच्छी है पीने के लिए भारतीय मानक ब्यूरो (आईएस: 10500: 2012) में निर्धारित सीमाएं</p> |

कार्यकारी सारांश सोन जिला औरंगाबाद नदी पर प्रस्तावित रेत खनन परियोजना (औरंगाबाद सोन कलस्टर -05)

| | |
|------------------------------------|--|
| | <p>पानी। उपरोक्त परिणाम के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला गया है कि भूजल नमूने पीने के उद्देश्य के लिए फिट हैं।</p> <p>सर्फेस वाटर क्वालिटी का अवलोकन बेस्ट को पूरा करने के लिए मिला CPCB का नामित उपयोग (BDU) मानदंड। कोई धातु संदूषण नहीं था सतह के पानी के नमूनों में पाया गया।</p> |
| मिट्टी का गुणवत्ता | <p>पहचाने गए स्थानों से एकत्र किए गए नमूने पीएच मान को दर्शाते हैं 6.63 से 8.04 जो दर्शाता है कि मिट्टी प्रकृति में थोड़ी क्षारीय है।</p> <p>मिट्टी, नमूनों और मिट्टी का प्रतिशत 49.2% से 79.24%, 8.1%से 18.7%, और मिट्टी के नमूनों में क्रमशः 11.8% से 36.1% तक है, जल धारण क्षमता 21.75 से 38.31 Mg / 100 तक पाई गई थी। ग्राम।</p> |
| पारिस्थितिकी और जैव-विविधता | <p>अध्ययन क्षेत्र में कोई पारिस्थितिक रूप से संवेदनशील क्षेत्र मौजूद नहीं हैं।</p> |

संबंधित पर्यावरणीय विभाग

वायु पर्यावरण पर प्रभाव

खनिजों का संग्रह और उठान अर्ध-यंत्रवत् किया जाएगा। इसलिए, उत्पन्न धूल नगण्य होने की संभावना है क्योंकि कोई ड्रिलिंग और ब्लास्टिंग नहीं होगी। केवल वायु प्रदूषण स्रोत ही ट्रकों का सड़क परिवहन नेटवर्क हैं।

पानी सड़कों पर दिन में दो बार छिड़काव किया जाएगा। इससे धूल उत्सर्जन में और 74% की कमी आएगी। संचालन के दौरान उत्सर्जन सीमाओं के अनुपालन को सुनिश्चित करने के लिए निगरानी की जाएगी

जल पर्यावरण पर प्रभाव

मानसून के मौसम में नदी के भीतर या आस-पास से रेत के खनन का भौतिक-रासायनिक निवास स्थान की विशेषताओं पर अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। इन विशेषताओं में स्ट्रीम रफनेस एलिमेंट्स, डेपथ, वेलोसिटी, टर्बिडिटी, सेडिमेंट ट्रांसपोर्ट और स्ट्रीम डिस्चार्ज शामिल हैं।

बेड सामग्री खनन से उत्पन्न बायोटा के लिए हानिकारक प्रभाव, निम्नलिखित के कारण होते हैं:

- नदी के संशोधन के परिणामस्वरूप प्रवाह पैटर्न में बदलाव
- मानसून के मौसम में निलंबित तलछट की अधिकता।

प्रोजेक्ट गतिविधि केवल सोनरिवर के सूखे हिस्से में की जाएगी। इसलिए, परियोजना की कोई भी गतिविधि जल पर्यावरण को सीधे प्रभावित नहीं करती है। परियोजना में, मानसून के मौसम में किसी भी धारा को मोड़ना या काट देना प्रस्तावित नहीं है। नदी (मानसून) में या तो भूजल के दोहन के लिए किसी भी प्रस्ताव की परिकल्पना नहीं की गई है।

भूमि पर्यावरण पर प्रभाव

धारा बिस्तर सामग्री का प्रस्तावित निष्कर्षण, मौजूदा धारा के नीचे खनन, और चैनल-बिस्तर के रूप और आकार में परिवर्तन से चैनल बिस्तर और बैंकों के क्षरण, चैनल ढलान में वृद्धि, और चैनल आकारिकी में परिवर्तन जैसे कई प्रभाव हो सकते हैं, यदि संचालन व्यवस्थित रूप से नहीं किया जाता है।

रेत के व्यवस्थित और वैज्ञानिक निष्कासन से बेड की गिरावट नहीं होगी। कचरे के रूप में उत्पन्न गाद और मिट्टी का उपयोग वृक्षारोपण के लिए किया जाएगा या अन्य जगहों पर कम स्तर को भरने के लिए किया जाएगा। गैर-मानसून सीजन में ही खनन की योजना बनाई जाती है, ताकि हर साल मानसून के दौरान खुदाई वाला क्षेत्र धीरे-धीरे भर जाता है।

शोर पर्यावरण पर प्रभाव

प्रस्तावित खनन गतिविधि प्रकृति में अर्ध-मशीनीकृत है। खनन गतिविधि के लिए कोई ड्रिलिंग और ब्लास्टिंग की परिकल्पना नहीं की गई है। इसलिए, खनिजों के परिवहन के लिए तैनात वाहनों की

कार्यकारी सारांश सोन जिला औरंगाबाद नदी पर प्रस्तावित रेत खनन परियोजना (औरंगाबाद सोन कलस्टर -05)

आवाजाही के कारण एकमात्र प्रभाव अनुमानित है। वाहनों को अच्छी स्थिति में रखा जाएगा ताकि शोर न्यूनतम न्यूनतम स्तर तक कम हो जाए।

जैविक पर्यावरण पर प्रभाव

जैसा कि प्रस्तावित खनन वैज्ञानिक तरीके से किया जाएगा, बहुत महत्वपूर्ण प्रभाव अनुमानित नहीं है। जलीय जीवन पर प्रभाव को कम करने के लिए मानसून के मौसम के दौरान कोई खनन नहीं किया जाएगा, जो मुख्य रूप से कई प्रजातियों के लिए प्रजनन का मौसम है। खनन स्थल पर कोई वनस्पति नहीं है, वनस्पति की कोई निकासी नहीं की जाएगी। घास की सड़कों को पानी के साथ छिड़का जाएगा जिससे धूल का उत्सर्जन कम होगा, जिससे फसलों को नुकसान होगा।

सामाजिक आर्थिक पर्यावरण पर प्रभाव

क्षेत्र में खनन गतिविधि का प्रभाव क्षेत्र के सामाजिक-आर्थिक वातावरण पर सकारात्मक है। जब भी जनशक्ति की आवश्यकता होगी रेत खनन स्थानीय लोगों को रोजगार प्रदान करेगा।

पोस्ट परियोजना पर्यावरणीय निगरानी

| क्र.सं. | पैरामीटर का वर्णन | निगरानी की अनुसूची |
|---------|---------------------------------|---|
| 1 | हवा की गुणवत्ता | मानसून को छोड़कर प्रत्येक मौसम में सप्ताह में दो बार 24 घंटे के नमूने |
| 2 | पानी की गुणवत्ता (भूतल और भूजल) | साल में एक बार 4 सीजन के लिए |
| 3 | मिट्टी की गुणवत्ता | वर्ष में एक बार परियोजना क्षेत्र में |
| 4 | शोर का स्तर | साल में दो बार पहले दो साल और फिर साल में एक बार |
| 5 | सामाजिक-आर्थिक स्थिति | 3 साल में एक बार |
| 6 | वृक्षारोपण की निगरानी | एक बार एक सीजन में |

अतिरिक्त छात्र

सार्वजनिक सुनवाई

जनसुनवाई का मसौदा ईआईए द्वारा संबंधित अधिकारियों को प्रस्तुत किए जाने के बाद आयोजित किया जाएगा। जनता और अन्य हितधारकों द्वारा पहचाने गए मुद्दों और मद्दों को सार्वजनिक सुनवाई मिनटों के रूप में दी जाएगी, तदनुसार इसे अंतिम एनआईए रिपोर्ट में शामिल किया जाएगा।

जोखिम आकलन

पूर्ण खनन परिचालन एक योग्य खान प्रबंधक होल्डिंग के प्रबंधन नियंत्रण और दिशा के तहत किया जाएगा। डीजीएमएस नियमित रूप से खदान प्रबंधन द्वारा आपदा के मामले में स्थायी आदेश, मॉडल स्थायी आदेश और परिपत्र जारी किए जा रहे हैं, यदि कोई हो। इसके अलावा, खनन कर्मचारियों को समय-समय पर उन्हें सचेत करने के लिए रिफ्रेशर पाठ्यक्रमों में भेजा जाएगा।

आपदा प्रबंधन योजना

आपदा प्रबंधन की योजना में आपातकालीन तैयारी एक महत्वपूर्ण पहलू है। कार्मिक उपयुक्त ढंग से प्रशिक्षित और सावधानीपूर्वक नियोजित, सिम्युलेटेड प्रक्रियाओं के माध्यम से आपातकालीन प्रतिक्रिया में मानसिक और शारीरिक रूप से तैयार होंगे। इसी तरह, प्रमुख कर्मियों और आवश्यक कर्मियों को संचालन में प्रशिक्षित किया जाएगा।

परियोजना लाभ

शारीरिक लाभ: सड़क परिवहन, बाजार, हरित आवरण और सामुदायिक संपत्ति का सृजन।

सामाजिक लाभ: रोजगार में वृद्धि, सरकारी खजाने में योगदान, स्वास्थ्य संबंधी गतिविधियों में वृद्धि, शैक्षिक उपलब्धि और मौजूदा सामुदायिक सुविधाओं को मजबूत बनाना।

पर्यावरणीय लाभ:

- नदी चैनल को नियंत्रित करना और बैंकों की सुरक्षा।
- बाढ़ के कारण आसपास की कृषि भूमि को जलमग्न करना।
- नदी के स्तर में वृद्धि को कम करना।
- अवैध खनन गतिविधि पर एक जांच।

कॉर्पोरेट एनवायरनमेंटल रिस्पांसिबिलिटी

परियोजना लागत की पूंजीगत लागत का 2% शिक्षा, सामाजिक कारणों, स्वास्थ्य देखभाल और पर्यावरण से संबंधित गतिविधियों के लिए कॉर्पोरेट पर्यावरणीय जिम्मेदारी के लिए आवंटित किया जाएगा।

पर्यावरण प्रबंधन योजना (ईएमपी)

- बैंक से सेप्टी ज़ोन छोड़कर बेड से निकासी की जाएगी।
- अधिकतम कार्य गहराई क्षेत्र के भूजल तालिका के ऊपर रहेगी।
- स्वास्थ्य प्रभाव को कम करने के लिए प्रभाव क्षेत्र में श्रमिकों और आसपास के लोगों को स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान करें।
- वन्यजीव संरक्षण सुनिश्चित करना और उसी के लिए जागरूकता अभियान चलाना।
- नदी को ठीक तलछट छोड़ने वाली गतिविधियाँ कम से कम करें।
- खनिजों के परिवहन और हैंडलिंग के दौरान गड़बड़ी को कम करने के लिए प्रभावी शमन उपायों को अपनाया जाएगा
- स्थानीय / देशी और तेजी से बढ़ती प्रजातियों के रोपण के साथ पुनर्स्मरण कार्यक्रम की स्थापना
- मानसून के मौसम की शुरुआत में खदान के बंद होने के दौरान बहाली योजना की स्थापना।
- आसन्न आपदाओं के प्रभावों से बचने के लिए समय पर एहतियाती कदम उठाने के लिए प्रभावी आपदा प्रबंधन योजना की स्थापना।
- पर्यावरण प्रबंधन सेल द्वारा प्रभावी निगरानी कार्यक्रम की स्थापना।

कार्यकारी सारांश सोन जिला औरंगाबाद नदी पर प्रस्तावित रेत खनन परियोजना (औरंगाबाद सोन कलस्टर -05)

TABLE-1.6: - पर्यावरण प्रबंधन प्रबंधन

| औरंगाबाद सोन 39 | | | |
|------------------------|---|---------------------------|--------------------------|
| क्र। नहीं | विवरण | पूंजीगत लागत (लाख) | आवर्ती लागत (लाख) |
| 1 | प्रदूषण नियंत्रण और धूल दमन | शून्य | 2.5 |
| 2 | प्रदूषण की निगरानी i) वायु प्रदूषण ii) जल प्रदूषण iii) मिट्टी iv) शोर प्रदूषण | - | 3.5 |
| 3 | एक माली के लिए वृक्षारोपण और वेतन (अंशकालिक आधार)। | 5.4 | 0.5 |
| 4 | ढोना सड़क रखरखाव लागत | 1.25 | 1.44 |
| संपूर्ण | | 6.65 | 7.94 |
| औरंगाबाद सोन 40 | | | |
| क्र। नहीं | विवरण | पूंजीगत लागत (लाख) | आवर्ती लागत (लाख) |
| 1 | प्रदूषण नियंत्रण और धूल दमन | शून्य | 2.5 |
| 2 | प्रदूषण की निगरानी i) वायु प्रदूषण ii) जल प्रदूषण iii) मिट्टी iv) शोर प्रदूषण | - | 3.5 |
| 3 | एक माली के लिए वृक्षारोपण और वेतन (अंशकालिक आधार)। | 10.0 | 0.5 |
| 4 | ढोना सड़क रखरखाव लागत | 1.25 | 1.44 |

| | | |
|---------|-------|------|
| संपूर्ण | 11.25 | 7.94 |
|---------|-------|------|

निष्कर्ष

ईआईए अध्ययन के आधार पर यह देखा गया है कि धूल प्रदूषण में वृद्धि होगी, जिसे पानी और वृक्षारोपण के छिड़काव से नियंत्रित किया जाएगा। खनन गतिविधियों के कारण परिवेशी वातावरण और पारिस्थितिकी पर एक नगण्य प्रभाव पड़ेगा, इसके अलावा खनन कार्य क्षेत्र में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार पैदा करेगा। क्षेत्र के चारों ओर ग्रीन बेल्ट विकास को एक प्रभावी प्रदूषण शमन तकनीक के रूप में भी लिया जाएगा, साथ ही खदान के परिसर से जारी प्रदूषकों को नियंत्रित करने के लिए भी। खनन कार्य जारी रहने तक निगरानी कार्यक्रम का पालन किया जाएगा। इसलिए, यह संक्षेप किया जा सकता है कि खदान के विकास से क्षेत्र के सामाजिक-आर्थिक वातावरण पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा और क्षेत्र का सतत विकास होगा।
